कीट पंतगों और बीमारियों के कारण फसलों को क्षति

1714. **श्री जनेश्वर मिश्र:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि कीट-पतंगों और अन्य बीमारियों से करोड़ों रुपये की फसल की हानि होती है;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि यदि इसका निवारण कर दिया जाए तो भारत में अनाज भरपूर मात्रा में उपलब्ध होंगे; और

(ग) यदि हां, तो इन कीट-पतंगों द्वारा कुल कितना अनाज खा लिया जाता है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल): (क) से (ग) फसल उत्पादन में हानि कीटों और रोगों के कारण होती है जो प्रत्येक फसल और प्रत्येक क्षेत्र में भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए कीटों और रोगों से फसलों की रक्षा करना ही उत्पादन बढ़ाने का एक सही तरीका है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार कीटों (कृमियों, कृन्तकों, रोगों, खरपतवारों आदि) द्वारा फसल का नुकसान संभावित उपज का 10 से 30 प्रतिशत की रेंज में है।

Review of Price-Rise of Urea

1715. SHRI KRISHNA KUMAR BIRLA: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether Government have increased the price of urea barely 30 days before the presentation of general budget;

(b) if so, the reasons and justification thereof;

(c) whether the farmers have been affected at large and such a step of Government is going to affect on price-rise of all commodities;

(d) if so, whether Government propose to review its decision on the price-rise of urea; and

(e) if so, by when and if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI SOMPAL): (a) and (b) The price of urea has been increased from Rs. 3660 per MT to Rs. 4000 per MT with effect from 29th January 1999. The increase was warranted both from the point of view of fiscal sustainability and balanced nutrient application.

(c) The impact of the price increase on the cost of cultivation is likely to be less then one percent while the impact on the general price level would be negligible.

(d) and (e) As the urea price rise was warranted both from fiscal and agronomic considerations and as it is not likely to have any significant adverse effect, it is not proposed to review the decision.

बीजों की उन्नत किस्में

1716. **श्री राज मोहिन्दर सिंह:**
श्री कपिल सिब्बल:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा गत तीन वर्षों के दौरान अनेकों उन्नत किस्म के बीजों की खोज की गई है;

(ख) यदि हां, तो ऐसे बीजों का ब्यौरा क्या है और वे किन-किन खाद्यान्नों से संबंधित है;

(ग) क्या इनकी गुणवत्ता व उत्पादन क्षमता मौजूदा फसल की गुणवत्ता व उत्पादन मात्रा से अधिक है; और

(घ) यदि हां, तो इन बीजों की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता का आकलन क्या है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोमपाल): (क) जी, हां। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा गत तीन वर्षों के दौरान बीजों की अनेक उन्नत किस्मों का विकास किया गया है।

(ख) खाद्यान्नों की इन उन्नत किस्मों के नाम विवरण-I में दिए गए हैं। (नीचे देखिए)

(ग) इन बीजों की उत्पादन क्षमता पहले से उपलब्ध किस्मों की तुलना में बेहतर है।

(घ) इन बीजों की गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता संबंधी आकलनों का ब्यौरा विवरण-II में दिया गया है।